RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 6, 7/10 मई 2015 तदनुसार 27 बैशाख सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
07 MAY 2015
JALANDHAR CITY R.M.S.

जिनकी वाणी गण्या

ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवमुत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति।
दिवोरुचः सुरुचो रोचमाना इळा येषां गण्या माहिना गीः ।।

-ऋ० ३।७।५

शब्दार्थ-वे अरुषस्य-अहिंसक, **वृष्णः**-सुखवर्षक के, **शेवम्**-आनन्द को, निधि को, **जानन्ति**-जानते हैं, **उत**-और **ब्रध्नस्य**-उस महान् के, **शासने**-शासन में, **रणन्ति**-आनन्द करते हैं, वे **सुरुचः**-अत्यन्त कान्तिमान्, सुरुचिपूर्ण हैं और **दिवः**-ज्ञान के, **रुचः**-प्रकाश से। **रोचमानाः**-देदीप्यमान होते हैं, **येषाम्**-जिनकी, **गीः**-वाणी, **माहिना**-महत्त्व के कारण, **गण्या**-गण्य, मान्य और **इळा**-प्रशंसनीय है।

व्याख्या- संसार में कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं कि सारा-सारा दिन चिल्लाया करते हैं, किन्तु उनकी बात की ओर कोई भी कान नहीं देता। दूसरे वे हैं जिनकी बात सुनने को संसार सदा लालायित रहता है, उत्सुक रहता है। उनके एक-एक वचन को सावधानता और ध्यान से सुना जाता है और गम्भीरतापूर्वक उसकी गहराई तक पहुंचने का यत्न किया जाता है। सचमुच ऐसों की वाणी ही वाणी है। तभी वेद कहता है-

'इळा येषां गण्या माहिना गीः'- जिनकी वाणी महत्त्व के कारण गण्या तथा प्रशस्या है। वे सदा सावधान रहते हैं कि उनकी वाणी से किसी को हानि न हो। वे सत्य तो बोलते हैं और सत्य ही बोलते हैं, किन्तु उनका सिद्धान्त है कि-

'सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात् ब्रूयात्सत्यमप्रियम्' -मनु० ४।१३८

सत्य बोले, प्रिय बोले, किन्तु अप्रिय सत्य कभी न बोले।

उन्हें ज्ञात है, तलवार का घाव ठीक हो जाता है, किन्तु 'वाक्क्षतं न प्ररोहति' वाणी का घाव नहीं भरता है। उन्होंने योगियों से सुन रखा है-

एषा सर्वभूतोपकारार्थं प्रवृत्ता न भूतोपघाताय।
यदि चैवमप्यभिधीयमाना भूतोपघातपरैव स्यात् न सत्यं भवेत् पापमेव भवेत्।।

-यो०द० २।३० व्यासभाष्य

यह वाणी सब प्राणियों के उपकार के लिए प्रयुक्त की जाती है न कि प्राणियों की पीड़ा के लिए और यदि यह इस भांति कहीं जाकर प्राणियों की पीड़ा का कारण हो, तो वह सत्य नहीं है, पाप ही है, अर्थात् सत्य बोलने का प्रयोजन प्राणियों का हित है। यदि वह सिद्ध नहीं होता, तो मौन का अवलम्बन करना चाहिए। परोपकार अथवा पराए अनिष्ट से उच्चारण किए वचनों का परिणाम बोलने वाले को भी कभी न कभी भोगना ही पड़ता है। अतः बोलने से पूर्व तोलना चाहिए। सत्यवादिता के अहंकार में पापोच्चारण हो जाया करता है। इसका सदा ध्यान रखना चाहिए। सचमुच अहिंसा में जो रस है, आनन्द है, वह हिंसा में कहां ? हिंसक को सदा प्रतिहिंसा का भय सताता रहता है और वे-

'ब्रधनस्य शासने रणन्ति'-महान् भगवान् के शासन में, आज्ञापालन में आनन्द मानते हैं। भगवान के उपदेश तथा सृष्टि नियम के अनुकूल चलकर वे अपना तथा पराया कल्याण साधते हैं और इसी कारण-

'दिवो रुचः सुरुचो रोचमानाः'-ज्ञान प्रकाश से उत्तम कान्तियुक्त होकर देदीप्यमान रहते हैं। अहिंसक की दीप्ति और तेज अवर्णनीय होते हैं। हिंसक पशु तक उनके प्रभाव में आकर वैर छोड़ देते हैं। प्रेम की-अहिंसा की महिमा ही ऐसी है। इसलिए-वेद में मीठा बोलने का बार-बार विधान है-'वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषम्' (अ० ५।७।४) = मैं प्रीतियुक्त वाणी बोलता हूं।

अतः साधक! आ तू भी अपनी वाणी को गण्या बना। मीठे बोल से लोगों को अपना बना उसके लिए वेदोक्त प्रेमपथ-अहिंसक मार्ग को अपना और उससे पूर्व अहिंसक भगवान् के शासन में चलना अपने को सिखा। नम्र और अहिंसक बनकर तेरा ओज और तेज घटेगा नहीं, बढ़ेगा ही। वह तेरा ओज सर्वाभिभावी होता हुआ भी जनमनहारी होगा।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

मेरा गुरुतम लक्ष्य एवं आपकी अधीरता

-लेखक : आचार्य अग्नि व्रत नैष्ठिक वेद ज्ञान मन्दिर - भीनमाल (जालोर)

(गतांक से आगे)

हमारे यहां कुछ नामी विद्वान् जिनके कट्टर भक्त आज भी हजारों की संख्या में हैं, ब्राह्मण ग्रन्थों पर अपने शोधपरक भाष्य कर गए, जिसमें मांसाहार और पशुबलि जैसे पापों का भी प्रचुर समावेश है और विद्या और बुद्धि की बात कोई भी नहीं है। ब्राह्मण ग्रन्थों का सरल हिन्दी अनुवाद करके वे तो अमर हो गए परन्तु विद्या-विज्ञान की एक किरण भी कहीं प्रकाशित नहीं कर पाए। यह बात पृथक् है कि उन्होंने अन्य अनेक विषयों पर तार्किक और गम्भीर ग्रन्थ भी लिखे, जिनके लिए आर्य जगत् उनका ऋणी भी है। हमारे समाज में दर्शनों का भी पर्याप्त अध्ययन, लेखन, प्रचार और प्रशिक्षण हुआ व हो रहा है परन्तु अब तक योगदर्शन के कुछ सूत्रों और उनके व्यास भाष्य को चिन्त्य और सृष्टि क्रम विरुद्ध मानकर भी कुछ विद्वान् योग निष्णात और महान् दार्शनिक समझे जा रहे हैं। वैशेषिक दर्शन जो एक पदार्थ विद्या का महान् ग्रन्थ है उसको लेकर किसी भी शोधकर्त्ता ने वर्तमान वैज्ञानिकों के सम्मुख खड़ा होने का विचार तक नहीं किया। उपनिषदों की अनेक टीकाएं उपलब्ध हैं परन्तु उपनिषदों में विद्यमान गम्भीर विज्ञानों का उद्घाटन किसी ने भी करने का प्रयास नहीं किया है, पुनरपि उन विद्वानों ने अपने सामर्थ्यानुसार उपनिषदों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने का उपकार तो किया ही है। हमारे यहां रामायण, महाभारत और मनुस्मृति आदि पर भी शोध किया गया, इनमें से अधिकांश विद्वानों का प्रयास प्रक्षिप्त और मूल का भेद करना मात्र रहा है न कि उनमें विद्यमान कुछ गूढ़ एवं उच्च वैज्ञानिक रहस्यों को उदघाटित करना जबकि ऐसा किया जाना अति आवश्यक है। गूढ़ विज्ञान को उद्घाटित किए बिना एवं वेदादि शास्त्रों की वैज्ञानिकता को समझे बिना प्राचीन इतिहास में विभिन्न बिन्दुओं की वेद एवं सृष्टि विज्ञान विरुद्धता को जाना और समझा नहीं जा सकता। इस कारण बहुत कुछ शोधन मनमाने और वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। इस कारण शास्त्रों की गरिमा उस स्तर को प्राप्त न कर सकीं जिसकी वो वास्तव में अधिकारिणी है। हां, गरिमा नष्ट अवश्य होती जा रही है, जा चुकी है। अनेक प्रसंगों को प्रक्षिप्त घोषित करके निकाल दिया गया, जिससे अनेक तथ्यों का मूल सहित लोप हो गया, जो सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु मानव जाति की बड़ी भारी हानि है। अब वर्तमान में एक विचित्र ढंग का शोध हो रहा है, जिसमें महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों की एक-एक पंक्ति की अपने ढंग से विचित्र व अनाधिकृत प्रूफ रीडिंग की जा रही है। भाषा को अपने अनुसार बदला जा रहा है। भाषा की सहज परिवर्तनशीलता और उसके प्रवाहमान इतिहास का उपहास किया जा रहा है। भाषा की सरलता व सादगी को अज्ञानता का प्रतीक माना जा रहा है। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक तथ्यों को मिथ्या घोषित करके उन्हें अपने अल्प स्वाध्याय और चिन्तन के अनुकूल उच्छृंखलता पूर्वक परिवर्तित किया जा रहा है जबकि महर्षि के ग्रन्थों में विद्यमान अनेक ऐसे तथ्य जिन पर गहन और विस्तृत शोध करके हम उनको विश्व प्रतिष्ठा व वैज्ञानिक चर्चा का विषय बना सकते हैं, पर न तो चिन्तन करने की योग्यता ही है और न इच्छा। आधुनिक शोधकर्त्ता शोध शब्द का अर्थ यही मानते हैं कि महर्षि दयानन्द के अपने ग्रन्थों में अनेक भूलें हैं, उन भूलों जो वस्तुत: भूल ही नहीं है तथा जिन पर कभी किसी विधर्मी का भी ध्यान नहीं गया, को चुन-चुनकर सार्वजनिक करना और उन्हें अपने ढंग से परिवर्तित व संशोधित करके अपने को महान् शोधकर्त्ता सिद्ध करना। बड़ा दुर्भाग्य है कि ऋषि के ग्रन्थों को अप्रमाणिक और असंख्य त्रुटियों का पिटारा सिद्ध करना तथा उन्हें अपने अपेक्षा मूर्ख सिद्ध करना आज आर्यों में गौरव और प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जा रहा है। यह कलंक हम केवल आर्य समाज में ही देख सकते हैं। अन्यत्र कहीं भी, कोई भी व्यक्ति अपने आदर्श पुरुषों की ऐसी दुर्गति करने का स्वप्न भी नहीं देख सकता।

आर्यो! इन उपर्युक्त कथित शोध कार्यों को करते-करते आर्य समाज को 140 वर्ष व्यतीत हो रहे हैं। ऋषियों और वेदों की प्रतिष्ठा और वर्तमान विज्ञान के प्रकाश में उनकी प्रासंगिकता 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के प्रकाश में विश्व में होना तो दूर की बात है, हमारे अपने परिवारों में भी यह सब नहीं रहा है। मैंने इस दिशा में विचार और कार्य करना आरम्भ किया। 10 अक्तूबर 2004 से यह कार्य मैं कर रहा हूं। मेरे सामने इन शोधकर्त्ता विद्वानों का मार्ग था। सायण आदि विद्वानों का भी मार्ग था। इस दिशा में मेरा कोई पथ प्रदर्शक भी नहीं था। मैंने अनेक शीर्ष आर्य विद्वानों से इस विषय में मार्गदर्शन चाहा भी था परन्तु सबने ही इस कार्य में असमर्थता ही जताई। अन्तत: एकमात्र ईश्वर विश्वास पर और मुट्ठीभर कार्यकर्त्ताओं के सहारे अकेला ही चलने को विवश हुआ। महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थ कुछ टिमटिमाते हुए प्रकाश संकेत अवश्य दे रहे थे परन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों के सर्वथा अज्ञात अन्धकार पूर्ण महासागर में उतरने के लिए कोई भी पतवार विशेष नज़र नहीं आ रहा था। मैं यह भी जानता था कि ब्राह्मण ग्रन्थों को समझे बिना वैदिक ज्ञान-विज्ञान को उद्घाटित करना सर्वथा असम्भव है। जो कार्य 140 वर्ष में सम्पूर्ण आर्य और पौराणिक जगत नहीं कर सका। करोड़ों, अरबों रुपयों का व्यय करने के उपरान्त भी वेद विज्ञान की किसी सुनिश्चित प्रणाली की एक पगडण्डी भी न बन सकी, उस स्थिति में आज 10-10½ वर्ष में ही आर्यजनों का मेरे कार्य के प्रति अधीर हो जाना क्या वास्तव में मेरे साथ न्याय है? क्या सम्पूर्ण आर्य समाज मुझे इतना स्नेह, सहयोग देता रहा है, जितना कि उसको इस महान् कार्य के लिए देना चाहिए ? यह मैं आर्य जगत् पर ही छोड़ता हूं। 'इण्डियन सायंस कांग्रेस' में भारतीय विज्ञान पर किए गए दुखद विवाद से पलवल (हरियाणा) निवासी श्याम सिंह जी आर्य इतने विचलित हुए कि उन्होंने मुझे एक उलाहना भरा पत्र ही लिख दिया कि मैं इस बहस पर समर्थ होते हुए भी मुझसे ऐसी अपेक्षा करते हैं। मेरे सभी दानी महानुभाव, कार्यकर्त्ता आदि बहुत आशाएं कर रहे हैं। हमारे प्रधान संरक्षक पूज्य स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती (उत्तरकाशी) जब गद्गद् होकर मुझे कहते हैं कि आप ऋषि का कार्य कर रहे हैं। आर्य जगत् के एक प्रख्यात दानवीर व हमारे न्यासी मान्य सेठ दीनदयाल जी गुप्ता जब स्वयं ही समय-समय पर दूरभाष पर मेरी आवश्यकताएं पूछते रहते हैं, तो फरीदाबाद की लगभग ८० वर्षीया मान्या माता प्रकाश देवी जी यह कहती हैं कि मैं आपका कार्य देखने के लिए जीवित रहूं, यही ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि मैं इन सभी सहयोगी आर्यों की श्रद्धा से स्वयं को दबा अनुभव करता है। मैं जानता हूं कि यह मेरे लिए जहां बड़े सम्मान और सौभाग्य की बात है, वहां यह मेरे लिए यह गुरुतर व गुरुत्तम भार भी है, जिसे उठाना मेरा नैतिक दायित्व है।

आर्यो! मेरी आपसे यह कोई शिकायत नहीं है कि आप जहां-जहां भी धन आदि का सहयोग करते हैं वहां-वहां परिणाम का तोल-माप नहीं करते और वहां-वहां किसी भी प्रकार की अपने आपको समय सीमा में बांध दिया है। वह समय सीमा आप सबको ज्ञात ही है। अब 6 वर्ष से भी शेष रह गया है। उसके बाद तो किसी से दान आदि सहयोग नहीं मांगूगा। लक्ष्य पूर्ण न होने की स्थिति में तो मैं आपसे दूर ही हो जाऊंगा। हां, मैं इस संस्था हेतु आपसे मांगा गया दान वापिस तो नहीं कर सकता, परन्तु आपके दान से बने इस ट्रस्ट व संस्था को त्याग अवश्य दूंगा और त्यागते समय संस्था से कुछ मांगूगा भी नहीं। मेरे पास व्यक्तिगत कुछ भी धन आदि नहीं होने पर भी मैं जाते समय संस्था से कुछ नहीं मांगूगा। उधर लक्ष्य पूर्व होने की स्थिति में भी अपने देश और समाज की वर्तमान दुर्दशा जिसमें कहीं भी सत्यधर्म का पूर्ण प्रकाश मुझे प्रतीत नहीं होता, सब ओर प्रदर्शन, विज्ञापन, धन व यश की मृगतृष्णा में फंसे अपने अविवेकी बन्धु दिखाई दे रहे हैं और समाज का भी सत्य सदाचार से कोई सरोकार नहीं रह गया है। उसे भी मेले, नाटक व जयकारे चाहिए। ऐसे में मेरा कोई प्रयोजन इस समाज से नहीं दिखता, इस कारण किसी भी संस्था व संगठन के किसी भी उत्तरदायित्व के पृथक रहकर स्वतन्त्र साधना आदि में ही रत रहूंगा। मैं समझता हूं कि या तो मैं समाज के अनुकूल नहीं हूं अथवा समाज मेरे अनुकूल नहीं है। (क्रमश:)

सम्पादकीय.....

वैदिक संस्कृति एवं जीवन पद्धति

विनाश का अवतरण तब होता है जब समाज धर्म से मुँह मोड़कर कोरे विज्ञान की तरफ झुकता है। सम्प्रदायों को अपना धर्म मानकर जब मनुष्य धर्म की अवधारणा लेकर ईर्ष्या द्वेष बांटता है। भौतिक उन्नति को ही सर्वोपरि समझ लिया जाता है और बिना सदाचार के पतनोन्मुख होता है। भौतिकवादी दर्शन जीवन स्तर में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाता प्रतीत होता है परन्तु शीघ्र ही चारित्रिक पतन के कारण सारी उपलब्धियां निरर्थक हो जाती हैं। भय तथा अपराध बढ़ते हैं, परिवार में बिखराव होता है। कला के स्थान पर नग्नता तथा अनाचार बढ़ता है। समाज एवं राष्ट्र विनाश के कगार पर खड़े होते हैं। ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या तथा दृश्य जगत ही सत्य है। यह मान्यता ही हमारे वैदिक दर्शन और संस्कृति पर प्रहार करते हैं। जो भी सभ्यता संस्कृति विहीन होती है वह शीघ्र ही अपने क्षितिज पर अस्त हो जाती है। वैदिक संस्कृति पर आधारित सभ्यता ही हमारी प्रगति का मूल होती है। विश्व की प्रथम संस्कृति सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा द्वारा ही हमने उपदेश पाया। मनुर्भव मानव बनो और देवताओं का निर्माण करो। आज विज्ञान और प्रगति की इस शीघ्रगामी दौड़ में मनुष्यता समाप्त हो गई है। मनुष्य कहीं दिखता ही नहीं। हर जगह हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई आदि सम्प्रदायों में बंटे हुए मनुष्य दिखाई देते हैं परन्तु कोई सच्चा मनुष्य नहीं दिखाई देता। जिसके अन्दर मानवता के गुण भरे हों, जो दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझे। शास्त्रों के अनुसार वही मनुष्य हो सकता है जो अपने कार्यों को सोच विचार करके करता है।

हमारे ऋषियों व मनीषियों ने मनुष्य निर्माण को सर्वोपरि माना एवं वेदों में मनुष्य बनने का उपाय क्या है? सर्वांगीण प्रगति का मार्ग क्या है? इस विषय पर गम्भीर चिन्तन किया। स्वस्ति पन्था मनुचरेम मनुष्य कल्याण के मार्ग पर चले परन्तु सोचने का विषय तो यह है कि कल्याणकारी मार्ग कौन सा है? ज्योतिष्मत: पथो रक्ष धियाकृतान वेद ने इसका समाधान बताया कि प्रकाश के मार्ग पर व्यक्ति चले और अपनी बुद्धि से उसकी रक्षा करे। आने वाले पथिकों के लिए इस मार्ग को प्रशस्त करे। ज्ञान का मार्ग ही, अध्यात्म का मार्ग ही जीवन के कल्याण का मार्ग है, बुद्धि एवं तर्क से निर्मित मार्ग है। ज्ञान का मार्ग मित्रता का मार्ग है। मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणिभूतानि समीक्षन्ताम्

विश्व में सभी प्राणी मेरे दृष्टिकोण में मित्र हैं, उन्हें अपने ज्ञान के चक्षुओं से मित्र की दृष्टि से देखूं, कोई शत्रुता का भाव मेरे अन्दर न आए क्योंकि हम सभी एक ही पिता की सन्तान हैं। जो अमृत है विष का वहां क्या प्रयोजन। महर्षि दयानन्द के चिन्तन के अनुरूप एक ईश्वर एवं धर्म, एक भाषा राष्ट्र का आधार रहे तो भय समाप्त हो जाएगा, द्वेष मिट जाएगा, लोभ मोह का अज्ञान छंट जाएगा। ऐसा उदार दृष्टि व चिन्तन मनुष्य को तब मिलेगा जब वह वेदों की ओर मुड़ेगा। यदि हम वैदिक चिन्तन को आधार मान कर राष्ट्र के लिए संकल्पित हो जाएं तब ही राष्ट्र की प्रगति सम्भव है। मन, वचन और कर्म से सत्य का आचरण, वीरता, सैन्य शक्ति, सत्य ज्ञान, वेदाध्ययन, तप, प्रकृति के नियमों का बोध राष्ट्र की उन्नति के साधन हैं। भौतिक पदार्थों का उत्पादन जिससे विश्व का कल्याण हो यह भी एक यज्ञ है। यत्र ब्रह्म च क्षत्रं सम्यञ्चौ चरत: सह अर्थात् जिस राष्ट्र में विद्या और वीरता दोनों की एक साथ पूजा होती है वहां शास्त्रों के गायन के साथ शस्त्रों की झंकार भी होती है। हमारे अन्दर संगच्छध्वं संवदध्वं की भावना बलवती हो। विचारों की समानता ही प्रगति का आधार है। हमने अपने जीवन का आधार भोग को नहीं त्याग को बनाना है। तभी हम मनुष्य कहला सकते हैं। यज्ञ शेष ही हमारा है, हमने इदन्न मम की भावना लेकर ही यज्ञ करने हैं। जीवन का लक्ष्य यदि यह बन जाए कि संसारिक सुख अल्प सुख हैं, आध्यात्मिक सुख सदा बना रहने वाला है तो हमें कोई भी लोभ अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। हम यदि इन्द्रियों के स्वामी बन जाए तो कोई भी विषय हमें आकृष्ट नहीं कर सकता क्योंकि विषय ही तो मनुष्य के सर्वनाश का कारण है। विषयों की ओर मन भटका तो पतन निश्चित है। भौतिकवाद के बढ़ते चरण ने ही मनुष्यों को विषयों से बान्ध रखा है। बुद्धि विनाश के कारण ही हम आज विरोचन बन गए है। जीवन का उत्थान तब सम्भव है जब हम अपनी मर्यादा में रहकर कर्म करेंगे।

आज हम अपना मार्ग भटक गए हैं। समाज में कुछ स्वार्थी तत्वों के फैलाए जाल के कारण हम मनुष्यता से गिर गए हैं। पाखण्ड़ और अन्धविश्वास के के अंधेरे में कहीं खो गए हैं। हमारे अपने ही लोगों ने षडयन्त्र कर हमें मार्ग से भटकाया है। वेदों से दूर करने में भी इनकी अहम भूमिका रही है। विद्या के क्षेत्र में स्त्री और शूद्रों को वंचित किया गया ताकि समाज में विषमता आए। बालक जो समाज का आधार होते हैं वे जननी से प्रारम्भिक संस्कार न प्राप्त कर सकें। विडंबना यह रही है कि ज्ञान को छोडकर हमने भौतिकवादी आकर्षण में फंसकर अपने कल्याण के मार्ग को छोड़कर पतन के रास्ते को ही सही रास्ता मान लिया है। हम जातिवाद के बन्धनों में बंधकर स्वयं एक दूसरे के शत्रु बन बैठे। एक लम्बे अन्तराल के बाद युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद किया। महर्षि दयानन्द की सबसे बडी विशेषता यह थी कि उन्होंने किसी के साथ भी असत्य के नाम पर समझौता नहीं किया। उन्होंने सम्प्रदायों से हटकर धर्म की मौलिक व्याख्या की। ऐसा धर्म जो किसी जाति विशेष, देश विशेष, समाज विशेष का न होकर सम्पूर्ण मानव समाज के लिए सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने वेद के रूप में दिया और वही मान्य है। उस युग पुरूष ने हमें सही दिशा देने का प्रयास किया। उन्होंने साहसिक घोषणा की कि मेरा कोई भी नवीन मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है बल्कि जो सत्य है उसको मानना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। उस ऋषि के दृष्टिकोण में राष्ट्र सर्वोपरि था। आज हम फिर से अपने राष्ट्र की उन्नति चाहते हैं तो हमें उसी वैदिक दृष्टिकोण को अपनाना होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो मार्ग दिखाया है उसी मार्ग पर चलना पड़ेगा। अपनी वैदिक संस्कृति को अपनाकर ही हम मानवता के उच्च आदर्श को पा सकते हैं। वैदिक संस्कृति के अनुसार अपनी जीवन पद्धति को बनाकर हम सच्चे मनुष्य बन सकते हैं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

भारतीय महीनों के नाम और उनका औचित्य

-ले० श्री देवेन्द्र प्रसाद शास्त्री 'सावित्रेय' रांची

भारतीय महीनों के नाम कैसे पड़े ? उन महीनों में मानव के लिए क्या सन्देश हैं ? इसका रहस्य वेद और वेदांग (ज्योतिपशास्त्र) के आधार पर समझा जा सकता है। अथर्ववेद में अट्ठाईस (28) नक्षत्रों का वर्णन किया गया है, परन्तु ज्योतिपशास्त्र 'अभिजीत' नक्षत्र को छोड़कर सत्ताईस (27) नक्षत्रों को स्वीकार करता है। हरिवंश पुराण में 'अभिजीत' नक्षत्र में ही योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण जी का भूमण्डल पर प्रादुर्भूत माना है। ज्योतिपशास्त्र में सत्ताईस (27) नक्षत्र, अश्वनी, भरणी, चित्रा, विशारवादि का वर्णन है। सभी ग्रह, उपग्रह और नक्षत्र गतिशील हैं। कुछ ग्रह और उपग्रह अपनी धुरी पर नाचते रहते हैं तो कुछ दूसरे ग्रहों के चक्कर काटते रहते हैं। जैसे जगत की आत्मा सूर्य अपने ही केन्द्र पर घूम रहा है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर नाच रही है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। जब चन्द्रमा घूमते-घूमते किसी खास नक्षत्र में आ जाता है, तब उसी नक्षत्र के नाम पर उस मास का नाम रखा गया है। उदाहरणार्थ जब चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए 'चित्रा' नक्षत्र में आ जाता है तब उस समय चैत्र मास की पूर्णिमा होती है, इसलिए उस मास को 'चैत्र' कहा गया। उसी प्रकार 'विशाखा' नक्षत्र में 'वैशाख' तथा 'ज्येष्ठा' नक्षत्र में 'जेठ' माह की पूर्णिमा होती है। 'श्रवणा' नक्षत्र में 'श्रावण' (सावन) और 'भद्रा' में 'भादो' आदि की पूर्णिमा होती है।

इस सत्य का उद्घाटन भास्कराचार्य ने किया था जिस समय भारत में वेदों का ज्ञान रूपी प्रकाश फैल चुका था, उस समय विश्व के अन्य देश अज्ञान के अन्धकार में डूबे हुए थे। उस समय वेदों ने संवत्सर, अयन, मास, पक्षादि की सीमा बांध दी थी।

उन सब में खास नाम दिए गए हैं। भारतीय महर्षियों ने अनेक रहस्यों का समय-समय पर साक्षात्कार किया। यजुर्वेद में बारह महीनों के नामों का जिक्र हुआ है। वेद में वर्णित मासों के नाम को वैदिक मास और लोक में प्रचलित मासों के नाम को लौकिक नाम कहा जाता है। भारत में प्रचलित महीनों के नाम प्रसिद्ध ज्योतिपविद-भास्कराचार्य के दिए हुए हैं। सभी महीनों के शब्दार्थों पर विचारने से मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि इनमें आध्यात्म का जिक्र हुआ है। ये महीने मानव की दैवी स्वरूप की ओर बढ़ने का सुरूचिपूर्ण ढंग से वर्णन करता है। उसे महामानव बनाने की जीवनचर्या निर्धारित करते हैं। बारह महीनों को द्वादश आदित्यदेव कहा गया है, क्योंकि ये ही अदितिरूप परमात्मा के पुत्र है, जो प्रतिदिन उदय होकर दिव्य सन्देश को बिखेरते जा रहे हैं-

''हे मानव समय रहते हुए जागो जीवात्मा के दैवी-स्वरूप की ओर बढ़ो।''

वेद में 'चेत' मास को 'मधुमास' कहते हैं। 'चैत' शब्द सृष्टा के उस संकल्प का परिचायक है, जिसके द्वारा परमात्मा अपने को अनेक रूपों में प्रकट करता है। जड़ और त्रिगुणात्मक प्रकृति की साम्यावस्था में चेतनता (क्षोभ) का संचार करता है। इसमें माधुर्य का संचार कर देता है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि आनन्दविभोर हो जाती है और सर्वत्र-''मूकं करोति वाचालं पंगु लङ्घते गिरिं। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवं।।'' की ध्वनि मुखरित हो जाती है। सभी गतिमान हो उठते हैं। 'वैशाख' को 'माधव' मास कहा जाता है। 'वैशाख' मास का अर्थ है-''शाखाओं को फैलाना अर्थात् ब्रह्म अपने प्रकाशन (मैनिफिसटेशन) की शाखाओं का विस्तार और विकास करते हुए मानव को उपदेश देता है कि तुम भी अपने अन्दर में मेरी उस ज्योति का विस्तार कर विकास मार्ग का दृढ़ संकल्पी बनो। जगत् सृष्टा का संकल्प शुद्ध और परम पवित्र कहा गया है, इसलिए वह सिद्धों का सिद्ध है। वह संकल्प बल से जैसा चाहता है, वैसा ही होता है। यदि मानव भी तदवत् शुद्ध शिवसंकल्पी हो जाए तो वह भी प्रभु कृपा से ज्ञान-विज्ञान का प्रकाशक और सिद्ध पुरुष की कोटि में चला जाता है।

उसी स्रष्टा का प्रकाश सर्वत्र छाया हुआ है। उसी के प्रकाश से सभी सांसारिक वस्तुएं प्रकाशित हो रही हैं। 'तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।' वही चराचर सृष्टि के कण-कण में रम रहे हैं।''

उसे जानने के लिए मनुष्य को ज्येष्ठ बनने की जरूरत पड़ती है। 'ज्येष्ठ' का अर्थ ही है बड़ा और महान्। यह बहुत्व के कारण होने वाली परिणामों का भी द्योतक है। परमात्मा ही सबसे बड़ा और महान् पालक है, उसे अथर्ववेद में ''तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः'' कह करके नमस्कार किया गया है। बड़ा बनने का उपदेश 'जेठ' माह देता है। मनुष्यों में अधिकार सुविधा, श्रेष्ठता तथा बड़प्पन प्राप्त करने के लिए संघर्ष और युद्ध होते हैं। इसलिए वह असह्य दुःखों से घिर जाता है। इसे आध्यात्मिक भाषा में 'आषाढ़' कहते हैं।

'आषाढ़' का अर्थ ही है-'चारों ओर से होने वाले असह्य दुःख।' जब मनुष्य उस दुखावस्था में पहुंच जाता है, तब वह उस दुःख के कारण को ढूंढने का प्रयास करता है। उससे छुटकारा पाने के लिए मनन करता है और मनन के द्वारा सारी कठिनाईयों और संदेहों को दूर करने के लिए प्रभु कृपा से दृढ़ निश्चयी बनता है। पदार्थों के पीछे छुपे हुए सत्य को खोजने का प्रयास भी करता है। दृढ़ निश्चयी और शिव-संकल्पी व्यक्ति ही गुरू के सदुपयोग श्रवण करने के लिए व्याकुल हो उठते हैं। इसकी चर्चा 'श्रावण' मास में की गई है।

श्रावण का अर्थ है-'गुरू से शिक्षा ग्रहण करना, श्रुति वाक्यों का सुनना।'' उसी की शिक्षा लेने शिष्य गुरू के पास जाता था। परमात्मा सर्वश्रेष्ठ और अजर, अमर गुरू हैं। उसकी शिक्षा वेदादि धर्मशास्त्रों में संग्रहित की गई है और उन्हीं वैदिक ऋचाओं को मनुष्यों के अन्तर्मन में संग्रहित बतलाया गया है-

''यस्मिन्नृचः सामयजुंषि यस्मिन् प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः।

यस्मिंश्चितं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।''

-यजु० 34/5

समय-समय पर महर्षियों ने वेदमन्त्रों का साक्षात्कार कर उन्हें अपौरूषेय घोषित किया। उनसे इतर लोगों की भी मान्यता ऐसी ही 'श्रुति' के प्रति रही। अस्तु।

उसी परमात्मा की दिव्य विभूति के रूप में गुरू भी स्वीकारे गए हैं। उस 'श्रुति' को गुरू से शिष्य सुनकर ही दीर्घकाल तक उन मन्त्रों को स्मरण रखने की परम्परा जारी रही। कालक्रम से मनुष्य की स्मृति (स्मरण शक्ति) का ह्रास होने लगा। 'द्वापर' युग के अंत में जब महर्षि वेद व्यास ने मानव सन्तति की स्मृति का ह्रास होते हुए अनुभव किया तब उस समय के विभिन्न ऋषियों की उन्होंने सभा बुलाई और 'श्रुतिज्ञान' को लिपिबद्ध कर दिया। उसी से 'श्रुतिज्ञान' की परम्परा जारी रही। वही 'श्रुति-ज्ञान' कालान्तर में 'वेद संहिता' कहलाई, जिसका गहन-चिन्तन और मनन करके आज भी दुःखी व्यक्ति दुःखों से मुक्त हो जाते हैं। आज भी वेद की महत्ता बनी हुई है, क्योंकि यही एक वैसा पवित्र ग्रन्थ है-जिसमें लौकिक और पारलौकिक दोनों पक्षों पर खुलकर सूत्र रूप में व्यवहारिक चर्चा की गई है। इसलिए तो वेद को मनुस्मृति में 'देवपितृ मनुष्याणां वेदः चक्षुः सनातनम्।' कहा गया। सुपात्र शिष्य और श्रेष्ठ गुरू की जरूरत सदा रही। इसी की 'स्मृति' श्रावण मास करा कर प्रतिवर्ष हमें उपदेश दे रहा है-''चेतन और विकासक शक्ति महान बने रहकर दुःखों से आच्छादित शक्तियों पर श्रावण मास की वर्षा है। सबों पर बरस कर शुचिता (पवित्रता) को बनाए रखती है। स्वयं पवित्र करा कर सब को पवित्र करती रहती हैं, अन्यथा चेतना, विकास और सृष्टि की गहनता अपवित्र होकर अवरुद्ध हो जाती। अतः व्यक्ति भी तदवत् बने। इस 'श्रावण-मास की सफलता पर 'भाद्रमास' प्रकाश डालता है।

'भाद्रपद' का अर्थ है-''आनन्द प्रसन्नता की स्थिति अर्थात् वह ज्ञान जो हमें परम आनन्द की स्थिति तक पहुंचा देने में प्रयत्न करता है और साधना के बल से वह अपने लक्ष्य और उद्देश्य की प्राप्ति भी कर लेता है। वेद में इस मास को ''नभस्य मास'' कहा गया है। 'भादो' मास को पूर्णिमा, ''भद्रा'' नक्षत्र में होती है।

सावन-भादों के महीने में आसमान चेतन, विकासशील और महानता के मेघों से घिर रहते हैं। मूसलाधार सुखवर्द्धक वृष्टि होती रहती है। बिजली की चमक चारों ओर चमकती रहती हैं। फलतः पृथ्वी पर चारों ओर हरियाली छाई रहती है। (क्रमशः)

हे प्रभु! मेरी पुकार सुनो

-ले० मनमोहन कुमार आर्य 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून

सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने मनुष्यों को अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न किया था। परमात्मा ने हमें पांच ज्ञानेन्द्रियों व पांच कर्मेन्द्रियों के साथ मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार भी प्रदान किये हैं जो अपना-अपना कार्य करते हैं।

ईश्वर के द्वारा हमें बुद्धि दिया जाना तभी सार्थक कहला सकता है कि यदि वह बुद्धि के लिए अपना स्वरूप भी हम पर प्रकाशित करे। इतना ही नहीं, उससे यह भी अपेक्षा है कि वह हमारे लिए आवश्यक व हितकर सभी प्रकार का सत्य ज्ञान हमें प्रदान करें जिससे हमें दिग्भ्रमित न होकर सत्य व ऋत मार्ग पर चलकर जीवन के उद्देश्य को पूरा कर सके। जीवन का अभ्युदय व मृत्यु के पश्चात् मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। मोक्ष से बड़ा कोई लक्ष्य मनुष्य जीवन का नहीं हो सकता। वेद ईश्वर से प्राप्त वह ज्ञान है जो उसने सृष्टि के आदि में सबसे अधिक पवित्र चार शुद्ध आत्माओं को दिया था। इस कारण से ईश्वर पर पक्षपात का आरोप नहीं लगता क्योंकि सृष्टि की आदि में अन्य मनुष्यों की इन चार ऋषियों के समान योग्यता व पात्रता नहीं थी। आज भी हम देखते हैं कि किसी विद्यालय में जो विद्यार्थी प्रथम आता है व इसके बाद दूसरे व तीसरे स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को ही पुरस्कृत करते हैं और इन्हें इसके बाद की उच्च श्रेणी में सहर्ष प्रवेश दिया जाता है जबकि दूसरों को प्रवेश तो मिल सकता है परन्तु उनका स्थान इनके बाद में आता है। आज हम ईश्वरीय ज्ञान ऋग्वेद 1/45/3 मन्त्र के भावों को प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्हें वेदों के सुप्रसिद्ध आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार जी ने प्रस्तुत किया है। वेद मन्त्र है-**'प्रियमेधव-दत्रिवज् जातवेदो विरुपवत्'। अंगिरस्वन्महिव्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम्।।** वेदाचार्य रामनाथ जी ने इसे 'हे प्रभु! मेरी भी पुकार सुनो' शीर्षक देकर इसकी व्याख्या की है।

मन्त्र के भावों की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि प्रभु के आगे खड़े-खड़े भले ही दिन-रात पुकार मचाते रहो, पर वे प्रत्येक की पुकार पर कान नहीं देते। वे पुकार सुनते हैं प्रियमेध की, अत्रि की, विरुप की, अंगिरस की।

प्रियमेध उसे कहते हैं जिसे मेधा या उत्कृष्ट बुद्धि प्रिय होती है। प्रियबुद्धि मनुष्य सदा बुद्धिसंगत प्रार्थनाएं ही करता है। एक अच्छे खासे बालक को अकस्मात् यह रोग हो गया है कि वह रात्रि में चिल्ला उठता था कि राक्षस पकड़ रहा है, बचाओ, बचाओ, और फिर उसकी घिग्घी बंध जाती थी। उसका कारण था उसके पिता की ओर से छोटी-छोटी बातों पर उसे भयंकर ताड़नाएं तथा यातनाएं दिया जाना। पर पिता इस कारण को न समझ, देवी का प्रकोप जान बालक के स्वास्थ्य के लिए देवी-जागरण कराने लगे। यह बुद्धिसम्मत पुकार नहीं थी, इसलिए उनकी पुकार अनसुनी हो गई। बालक के स्वास्थ्य का बुद्धिसंगत उपाय तो यह था कि पिता बालक को शारीरिक यातनाएं देना बन्द कर देते तथा उस पर प्रेम दर्शाते। अत्रि (अ-त्रि) उसे कहते हैं, जो आधिदैविक, आधि-भौतिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की विघ्न-बाधाओं की परवाह न करता हुआ आगे बढ़ने का प्रयास करता रहता है। आधिदैविक बाधाएं हैं भूकम्प, नदियों की बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि। अधिभौतिक बाधाएं हैं शत्रु मनुष्यों या सिंह, व्याघ्र आदि प्राणियों से उत्पन्न की गई विपत्तियां। आध्यात्मिक बाधाएं होती हैं शारीरिक रोगों या काम-क्रोध आदि के आक्रमण। इन सब बाधाओं को नगण्य करके आगे बढ़ते रहने वाले 'अत्रि' की पुकार को भी प्रभु सुनते हैं। भक्षणार्थक 'अद्' धातु से त्रिप् प्रत्यय करने पर भी 'अत्रि' शब्द सिद्ध होता है, जिसका अर्थ होता है काम, क्रोध आदि शत्रुओं के वश में न होकर उन्हें खा जाने वाला मनुष्य। उसकी भी प्रार्थना अनसुनी नहीं होती। विरूप उस मनुष्य को कहते हैं, जो विविध अच्छे रूपों को धारण करता है। समाज सेवक, जननेता, दीनोद्धारक आदि अनेक रूप उसके होते हैं। उसकी पुकार भी प्रभु के दरबार में अनसुनी नहीं होती। अंगिरस् तपस्वी मनुष्य को कहते हैं मानो जो अंगारों पर बैठा हुआ है। उसकी पुकार भी प्रभु द्वारा सुनी जाती है। कण्व मेधावी का वाचक है। उसके पूर्व 'प्र' लगा देने पर अतिशय अर्थ सूचित होता है। अत: प्रस्कण्व का अर्थ है अतिशय मेधावी। मन्त्र में प्रस्कण्व कह रहा है कि हे महान् व्रतों वाले अग्नि प्रभु! जैसे तुम प्रियमेध आदि की पुकार सुनते हो, वैसे ही मेरी भी पुकार सुनो तथा मुझे संकटों से जूझने का बल देकर मेरा उद्धार करो। जैसे तुम महान् व्रतों वाले हो, वैसे ही मुझे भी महाव्रतों का पालन करता बना दो। इस मन्त्र से ईश्वर ने मनुष्यों को यह शिक्षा दी है कि यदि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी पुकार व प्रार्थनाओं को सुनूं व उन्हें पूरा करूं तो तुम्हें पहले प्रियमेध, अत्रि, विरूप, अंगिरस व प्रस्कण्व बनना होगा जिसका अर्थ व तात्पर्य ऊपर बताया गया है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हमारी पुकार व प्रार्थनाएं नहीं सुनी जाएंगी। हम सभी मतों व धर्मों के बन्धुओं से निवेदन करते हैं कि वह इस वेदमन्त्र की शिक्षा पर विचार कर इससे लाभ उठाएं। उपर्युक्त मन्त्र का ऋषि प्रस्कण्व: काण्व: है, देवता अग्नि: है तथा मन्त्र का छन्द अनुष्टुप् है। वेदमन्त्र के पदों व शब्दों के अर्थ हैं-(प्रियमेधवत्) जैसे प्रियमेध की (सुनते हो) (अत्रिवत्) जैसे अत्रि की (सुनते हो) (विरूपवत्) जैसे विरूप को (सुनते हो), (अंगिरस्त्) जैसे अंगिरस् की (सुनते हो), वैसे ही (महिव्रत) हे महान् व्रतों वाले (जातवेद:) सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी प्रभु! तुम (प्रस्कण्वस्य) मुझ प्रस्कण्व की (हवम्) पुकार (श्रुधि) सुनो।

नए सत्र का शुभारम्भ हवन यज्ञ से

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में नए सत्र की शुरूआत में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की कार्यवाही श्री योगराज जी शास्त्री ने की और बच्चों को अपनी पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देने की प्रेरणा देते हुए और यज्ञ की महिमा समझाते हुए कहा कि बच्चों आपको पढ़ाई के साथ-साथ अपने माता-पिता और अध्यापकों का सम्मान करना चाहिए और पढ़ाई के साथ-साथ धार्मिक कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए व प्रभु की भक्ति करनी चाहिए। हवन यज्ञ में स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार जी एवं अन्य मैम्बर्स में बजीचन्द जी, गोपाल कृष्ण जी, रमाकान्त जी, सुरेन्द्र शास्त्री जी, विजय सरीन जी उपस्थित थे। हवन के पश्चात्, विजय सरीन जी ने बच्चों को अशीर्वाद दिया और समझाया कि हमें उन्नति के लिए निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए। इसके पश्चात् स्कूल के प्रधान जी ने बताया कि हमारा ऐसा स्कूल है जहां पढ़ाई के साथ-साथ समय-समय पर धार्मिक कार्यक्रम रखकर बच्चों को नैतिक शिक्षा भी दी जाती है। अन्त में स्कूल की प्रिंसीपल ने कहा बच्चों के लिए जितनी पढ़ाई जरूरी है उतनी ही धार्मिक शिक्षा नैतिक शिक्षा एवं सामाजिक शिक्षा भी जरूरी है। परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले बच्चों को पारितोषिक बांटे गए और प्रिंसीपल ने बच्चों को समझाया कि हमें अपने जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर होना चाहिए। अन्त में सबका धन्यवाद किया और शांति पाठ के पश्चात यज्ञ शेष बांटा गया।

-सुनीता मलिक

सुमनसः स्याम

स्ले० पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फाजिल्का

गतांक से आगे

परन्तु कभी-कभी गड़बड़ी भी हो जाती है। अत: सपना देखते हुए सावधान अवश्य रहिएगा। नहीं तो लेने के देने भी पड़ सकते हैं।

एक बार की बात है। एक कपड़े का व्यापारी सो रहा था। सोते-सोते उसने स्वप्न में देखा कि वह कपड़ा बेच रहा है। भाव तय हो गया। कपड़ा मापने के लिए गज उठाया। माप कर ली। कपड़ा फाड़ने के लिए कैंची से कट लगाया और जोर से फाड़ दिया। कपड़ा फाड़ने की आवाज़ होने से पत्नी की आंख खुल गई। देखा- सेठ ने अपनी धोती ही फाड़ दी है। वह बोली- 'यह क्या किया ?' सेठ ने कहा- 'मैं तो स्वप्न में कपड़े बेच रहा था। परन्तु क्या बताएं ? अपनी ही धोती फाड़ ली।'

एक और घटना आपके सम्मुख प्रस्तुत है-

एक मुहावरा है- घोड़े बेच कर सोना। यह मुहावरा कैसे बना ? सुनिए-

एक घोड़े का व्यापारी था। घोड़े बेच कर काम चलाता था। दिन-रात क्रय-विक्रय के बारे में सोचता रहता। एक बार स्वप्न में उसने देखा- एक ग्राहक घोड़ा लेने आया है। मोल-भाव होने लगा। परन्तु तय नहीं हो पा रहा था। स्वामी जितने पैसे मांग रहा था, ग्राहक उतने देने को तैयार न था। इसी बातचीत के दौरान ही व्यापारी की आंख खुल गयी। देखा- न तो वहां घोड़ा था और न ही ग्राहक। वह फटाफट मुंह ढक कर सो गया और हाथ आगे बढ़ा कर कहने लगा- 'अच्छा, ले आ उतने ही दे दे।'

परन्तु अब क्या हो सकता था ? जब चिड़िया चुग गई खेत। तभी से यह मुहावरा बन गया-

घोड़े बेच कर सोना। यदि घोड़े बेच कर नहीं सोए तो बाद में पछताना पड़ेगा।

कई लोग दिन में भी बड़े-बड़े सपने देखते हैं। उनका वर्णन करना हमारा विषय नहीं है।

जहां बड़े लोग बड़े-बड़े सपने देखते हैं, वहां अल्पायु बच्चे भी सपना देखने में पीछे नहीं हैं।

आप सोते हुए छोटे बच्चे पर नज़र डालें तो वह भी कभी हंसते, मुस्कराते और कभी रोते हुए नजर आता है। कभी-कभी तो बच्चा अचानक ही सोते हुए जोर से रो पड़ता है। मां घबरा जाती है। क्या हुआ मेरे बच्चे को ? थपकी देकर सुलाने का प्रयत्न करने लगती है।

अत: सोते और जागते हुए दूर-दूर जाने वाला मन वश में जल्दी आता ही नहीं। जितना प्रयत्न करो, उतना ही वह चंगुल से निकल भागता है।

इसीलिए शास्त्रों में कहा है-

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो:॥

मन ही मनुष्य के बन्धन और मुक्ति का कारण है। महाराजा भर्तृहरि को संसार से वैराग्य हो गया। धन-धान्य-राज्यादि अपना सर्वस्व त्याग कर वन को चल पड़े। मार्ग में रात्रि हो गई। पूर्णिमा का चन्द्रमा चमक रहा था। मार्ग में उन्हें कोई चमकती हुई वस्तु नज़र आई। मन आकर्षित हुआ। उन्हें लगा कि कोई मूल्यवान् वस्तु है। संभवत: हीरा। भर्तृहरि ने उसे उठाने के लिए आगे हाथ बढ़ाया। परन्तु हाथ में कुछ गीला-गीला सा लगा। ध्यान से देखा। पान की पीक थी। कोई यात्री पान खाकर मार्ग में थूक गया था। भर्तृहरि बड़े लज्जित हुए। उनके मुंह से अनायास ही निकल गया-

तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा:॥

वस्तुत: तृष्णा (लालसा) बूढ़ी नहीं हुई, हमीं बूढ़े हो गए।

देखा आपने भर्तृहरि हीरे, मोती, सोना आदि तमाम कीमती चीजें छोड़कर वन में गए थे। वैरागी थे। परन्तु वाह रे मन! कहां से कहां धकेल दिया। आकाश में ले जाकर फिर धरती पर पटक दिया। यह मन पान की पीक को ही हीरा समझ बैठा। आखिर मन ही तो है। कभी किधर तो कभी किधर। पता नहीं, कब त्यागी से भोगी बना दे। कुछ कहा नहीं जा सकता।

इस विषय पर हम जितना विचार करते हैं उतना ही उलझते चले जाते हैं। मन की गुत्थी को कैसे सुलझाएं ?

कहते हैं, एक साधु के पास उनके गुरु जी आ गए। वहीं शिष्य के आश्रम में ठहरे। आश्रम में अनेक शिष्य रहते थे। एक सप्ताह के लिए 'श्रीमद् भगवद् गीता' ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया गया। कथा बहुत प्रभावशाली रही। सप्ताहान्त में गुरु जी की विदाई का समय आ गया। साधु हाथ जोड़कर अत्यन्त विनम्रता के साथ बोला- 'गुरदेव! मेरा गीता पढ़ने का बहुत मन कर रहा है।' गुरु जी ने गीता दे दी।

साधु ने बड़ी ही श्रद्धा के साथ गीता को कपड़े में लपेट कर कुटिया में रख दिया। एक दिन उसकी नज़र पड़ी। ध्यान से देखा तो चूहे ने उसे कुतर दिया था। उसे बड़ी चिन्ता हुई। अपने शिष्यों को बताया। एक शिष्य ने कहा- 'बिल्ली रखनी चाहिए। वह चूहों को खा जायेगी।'

बात सभी को पसन्द आ गई। बिल्ली को रख लिया। तीन-चार दिन तो बिल्ली ने बड़ी ही उछल कूद के साथ चूहे मारे। परन्तु ठीक से खाना न मिलने से वह बहुत कमजोर हो गयी। चूहे मारने बन्द कर दिए।

साधु ने फिर शिष्यों को एकत्र किया। विचार विमर्श हुआ। एक शिष्य बोला- 'बिल्ली को स्वस्थ रखने के लिए दूध पिलाना चाहिए।' पर दूध का प्रबन्ध कैसे हो ? दूसरे शिष्य ने समाधान प्रस्तुत किया- 'गाय रखनी चाहिए।' सभी ने समवेत स्वर में इसका समर्थन किया।

गाय आ गयी। दो-तीन दिन तो गाय ने ठीक से दूध दिया। परन्तु फिर वह मरियल सी हो गयी। दूध देना बन्द करने लगी। साधु ने पुन: शिष्यों से सलाह ली। बीच में से एक शिष्य ने परामर्श दिया- 'गाय की देखभाल के लिए एक महिला को रख लेना चाहिए। जब गाय को समय पर चारा-दाना-पानी मिलेगा तो फिर दूध देने लगेगी।'

सभी को यह सुझाव जंच गया। महिला को रख लिया गया। काम ठीक से चलने लगा। चिन्ताएं समाप्त हो गईं। समय बीतने लगा। कई साल निकल गए। वह साधु बाल बच्चों वाला हो गया।

एक दिन वह साधु अपने बाल बच्चों के साथ कहीं जा रहा था। मार्ग में अचानक गुरु जी के दर्शन हो गए। बाल-गोपाल के साथ देखकर गुरु जी ने पूछ लिया-

'अरे! यह सब क्या है ?'

शिष्य ने उत्तर दिया- 'गुरु जी! यह सब 'गीता' की करामात है। गीता का ही विस्तार है, गीता का प्रचार है।'

यह सुनकर गुरु जी भी मन्द-मन्द मुस्कान के साथ आगे बढ़ गए।

देखा आपने! मन ने साधु को कहां से कहां पहुंचा दिया। इससे अधिक अधोगति भला और क्या हो सकती है ?

अत: सावधान! सफलता के लिए मन का निर्मल होना अनिवार्य है। इसी के दृष्टिगत मन की निर्मलता के लिए मानस तीर्थ में स्नान करने का विधान किया गया है-

ध्यानपूते ज्ञानजले राग द्वेष मलापहे।

य: स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम्॥

स्कन्द पु. 6/41

ध्यान से पवित्र, ज्ञान रूपी जल से शुद्ध तथा रागद्वेष रूपी मैल के नष्ट होने पर जो मानस तीर्थ में स्नान करता है, वह परमगति अर्थात् मुक्ति को प्राप्त होता है।

कबीर ने भी इसी बात को स्वीकार किया है-

कबिरा मन निर्मल भया जैसे गंगानीर।

पाछे लागा हरि फिरै, कहत कबीर-कबीर॥

आइए, मन को सुमन बना कर पुष्प की भांति खिलाएं। खिला हुआ कमल कीचड़ और जल में रहते हुए भी उससे ऊपर रहता है। उसी प्रकार हम भी सांसारिक वस्तुओं का उपभोग करते हुए भी उनमें लिप्त न हों। गुलाब का फूल कांटों के बीच में रह कर भी खिला रहता है। संकटों से घिरे होने पर भी मनुष्य को गुलाब के सदृश प्रसन्नचित रहने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी मानव जीवन की सार्थकता है।

चम्पति राय सेठ जी नहीं रहे

सर्वशक्तिमान् परम पिता परमात्मा के अटल नियमों का पालन करते हुए आर्य समाज कादियां के प्रधान श्री चम्पति राय सेठ जी 12-4-2015 प्रात: छ: बजे उत्तरायण पक्ष में अपनी जीवन यात्रा समाप्त की।

शवयात्रा सायं चार बजे शुरू हुई जिसमें उनके नगर के गणमान्य महानुभाव, आर्य परिवारों के सदस्यगण नगरपालिका के प्रधान श्री जरनैल सिंह जी महल, तृप्तराजिन्द्र सिंह बाजवा मैम्बर विधान सभा पंजाब, जाने वाली आत्मा के प्रति श्रद्धा के भाव प्रकट करते हुए सम्मिलित हुए।

ठीक पांच बजे उनके पार्थिक शरीर को वैदिक मर्यादाओं के अनुसार पांच तत्वों में विलीन करते हुए उनके सपुत्र श्री सुशील कुमार द्वारा मुखाग्नि देकर पुत्र धर्म निभाया।

-मंगत राय शर्मा महामंत्री

स्मृति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज फिरोज़पुर छावनी में दिनांक 14-4-15 को आनन्द परिवार ने प्रभु भक्ति ऋषि भक्त सुप्रसिद्ध समाज सेवी यज्ञ अतिथि यज्ञ प्रेमी महाशय छज्जू राय एवं उनकी धर्म पत्नी एवं आर्य माता शकुन्तला रानी की पुण्य स्मृति में महायज्ञ आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान पूज्य आचार्य देव राज विद्यावास्पति (मुम्बई, कपूरथला) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

पूज्य आचार्य जी ने कहा महाशय जी वैदिक धर्म के सच्चे पथिक आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता यज्ञ प्रेमी व आर्य समाज फिरोज़पुर छावनी के लगभग 45 वर्ष तक महामंत्री रहे। उनका सारा परिवार आर्य परिवार है 9 पुत्र एंव 4 पुत्रियां सभी सम्पन्न व अनन्य ऋषि भक्त समाज सेवा में सलंग्न हैं यज्ञ पश्चात उनके सुपुत्र विजय पाल आनन्द एवं रमेश आनन्द ने सभी विभिन्न संस्थाओं से पधारे आर्यजनों का धन्यवाद किया। परिवार की ओर से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई।

-मनोज आर्य, महामंत्री

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

दिनांक 25 अप्रैल 2015 को लगभग आधे भारत के साथ साथ हिमालयी राष्ट्र नेपाल में आए भयंकर भूकम्प से भारी तबाही हुई है। लगभग तीन हजार से ज्यादा इंसानी मौतें हो गई हैं और अभी भी कई जानें मलबे के नीचे दबी हुई हैं। इस भयंकर त्रासदी से जान-माल का भारी नुक्सान हुआ है। कई लोग बेघर और बेसहारा हो गये हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस भयंकर भूकम्प में बेघर और बेसहारा हुये लोगों के लिये एक राहत फंड खोलने की घोषणा की है। इसलिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों और आर्य शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वह अपनी शिक्षण संस्था और आर्य समाजों में राहत फंड के लिये अधिक से अधिक राशि एकत्रित कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के नाम बैंक ड्राफ्ट या चैक द्वारा भिजवाने की व्यवस्था करें। ताकि बेघर और बेसहारा हुये लोगों की आर्थिक सहायता की जा सके। आप द्वारा भेजी गई राशि के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपनी तरफ से भी राशि राहत फंड में डाल कर प्रधानमंत्री को भेंट करेंगी। आशा है आप सभी शीघ्रतिशीघ्र राशि एकत्रित कर सभा के नाम बैंक ड्राफ्ट द्वारा भिजवाने की व्यवस्था करेंगे।

धन्यवाद सहित।

-भवदीय, सुदर्शन शर्मा सभा प्रधान

आचार्य डॉ. पुष्पावती जी को प्रथम पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी की संस्थापिका स्व. आचार्य डॉ. पुष्पावती जी की प्रथम पुण्य तिथि दिनांक 2 मई दिन शनिवार को अपरान्ह 12 बजे से गुरुकुल परिसर में मुख्याधिष्ठात्री डॉ. गायत्री आर्या के आचार्यत्व में विधि विधान पूर्वक यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त श्रद्धाजंलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें वक्ताओं ने डॉ. पुष्पावती के व्यक्तित्व और समाज सेवा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला और कहा कि उन्होंने आर्य समाज एवं बालिका शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किया है, वह सदैव स्मरणीय और प्रेरणादायी रहेगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० नरेन्द्र कपूर जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. पुष्पावती जी जीवनपर्यन्त गुरुकुलीय शिक्षा और आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति समर्पित रही हैं। दिवंगत आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि देने का अर्थ है कि हम उनके बताए गए मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलें और समाजहित में उन्होंने मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल की स्थापना कर असहाय, निर्धन बालिकाओं की गुरुकुल परम्परा के अन्तर्गत शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण और उन्हें अतुलनीय कार्य किया है, उसे आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हम सभी पर है।

डॉ. पुष्पावती जी की उत्तराधिकारी वर्तमन आचार्य डॉ. गायत्री आर्या ने कहा कि माता जी निरन्तर कार्य करने में विश्वास करती थीं और रात्रि में मात्र 3-4 घण्टे सोती थी। शेष समय मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल के विकास के लिए योजनाएं बनाए और उसके लिए पत्र व्यवहार करने में लगाती थीं और उनके पत्र व्यवहार भी काफी प्रेरणादायी होते थे। आज उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर हम लोग मिलकर प्रण-प्रण से संकल्प लेते हैं कि उनके अधूरे कार्यों को पूरा कर उनके सपनों को साकार किया जाए, जो उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री दिनेश आर्य ने नेपाल भूकम्प पीड़ित दस कन्याओं को गुरुकुल में प्रवेश लेने का अनुरोध किया जिसे गुरुकुल परिवार ने सहर्ष स्वीकार कर इनके शिक्षा-दीक्षा व पालन-पोषण का दायित्व लेकर डॉ. पुष्पावती जी द्वारा बताए गए रास्ते का अनुसरण किया।

श्रद्धांजलि सभा में डॉ. सरस्वती देवी चतुर्वेदा, श्री मोहन लाल कुशवाहा, श्रीमती निर्मला सिंह, श्री मोती लाल आर्य, ब. मुकेश पाठक, शोभित, रूद्रमणि आदि शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। अन्त में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों सुश्री लक्ष्मी आर्या, सुधा आर्या, समित्रा आर्या, शिवांगी आर्या, अर्पिता आर्या, आरती आर्या, पूजा आर्या आदि ने भजन प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में श्री अशोक कुमार त्रिपाठी ने स्वागत भाषण किया और श्री राजेश राय धन्यवाद ज्ञापन किया।

-डॉ गायत्री आर्या, मुख्याधिष्ठात्री

आर्य समाज धूरी का वार्षिक निर्वाचन (चुनाव)

आर्य समाज धूरी का साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक 16.4.2015 दिन गुरुवार को सायं 3 बजे से वार्षिक निर्वाचन चुनाव आर्य समाज के सत्संग भवन में हुआ जिसमें वार्षिक आय-व्यय का ब्यौरा पेश किया गया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। इसके पश्चात् निर्वाचन की प्रक्रिया एडवोकेट जसवीर रत्न जी की अध्यक्षता में हुई। आर्य समाज के प्रधान पद के लिए श्रीमान प्रहलाद आर्य बांसल जी का नाम श्री वासुदेव आर्य जी ने प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन श्री वीरेन्द्र कुमार गर्ग जी ने किया और सभी उपस्थित महानुभावों ने सर्वसम्मति से आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य जी को स्वीकृत किया। बाकी अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार सर्वसम्मति से प्रधान जी को ही दिया गया।

इस अवसर पर उपस्थित थे-अशोक जिन्दल, सोम प्रकाश आर्य, डा. रामलाल आर्य, अशोक कुमार गर्ग, सतीश आर्य, पवन कुमार गर्ग, अरुण गर्ग, विवेक जिन्दल, विकास जिन्दल, रमेश आर्य, रामपाल आर्य, श्याम आर्य, आर. पी. शर्मा, कमल किशोर लवली, अरविन्द जिन्दल, राजीव मोहिल, अमित आर्य, हवर्ष बांसल, राजेश कुमार आर्य आर्य समाज के सभी सदस्यगण उपस्थित थे।

-शैलेश कुमार शास्त्री

वेदवाणी

हे आदित्यो! मरने से पूर्व मुझे बचा लो

जीवान्नो अभि धेतनादित्यासः पुरा हथात्
कद्ध स्थ हवनश्रुतः॥

-ऋ० ८/६७/५; अथर्व० २०/१८/३

ऋषिः -मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरुणिर्बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः॥

विनय- हे आदित्य देवो! दौड़ो! हमें बचाओ! मौत हमारे सामने मुंह खोले खड़ी है। अगले ही क्षण में हम उसके ग्रास होने वाले हैं। भोगों को भोगते हुए तो हमें मालूम न था कि ये आसानी से भोगे जाते हुए भोग एक दिन भोक्ता बनकर हमें खाने के लिए आएंगे। उस समय हम खुशी से अपने को इन विषयों के बन्धन-जाल में बांधते गए, यह अनुभव न किया कि हम मृत्यु के जाल में बंध रहे हैं, परन्तु अब इस समय का-यह मृत्यु-मुख में जाने का एक क्षण, पश्चात्तापमय यह एक क्षण, शेष सारे बीते हुए जीवन काल के मुकाबले में खड़ा है। बस, यही एक क्षण है इस बीच, हे आदित्यो! मैं तुम्हें पुकार रहा हूं। सुना है तुम जगदीश्वर की अखण्डनीय शक्तियां हो, तुम बन्धन जाल से छुड़ाने वाली शक्तियां हो, तुम प्रकाश देने वाली शक्तियां हो। तुम कहां हो ? मेरी पुकार क्यों नहीं सुनते? क्षण भर में दम निकलना चाहता है। तुम तो 'पुकार सुनने वाले' (हवनश्रुत्) प्रसिद्ध हो। तुमने बड़े-बड़े पापियों के हार्दिक पश्चाताप के करुण-क्रन्दनों को सुना है और उन्हें अन्तिम समय में भी उभारा है। क्या यह मेरा इस समय का पश्चात्तापमय रुदन भी हृदय से निकला रुदन नहीं है ? तो फिर तुम क्यों नहीं सुनते ? क्यों नहीं दौड़कर मुझे बचाते ? क्या अगले क्षण जब मैं मर चुकूंगा, मेरा विनाश पूर्ण हो चुका होगा, मेरी ही समाप्ति हो चुकी होगी, तब आओगे? तब क्या बनेगा ? ओह! यदि मेरा उबारना अभीष्ट है तो ये जो जीवन के दो-चार पल शेष हैं, इन्हीं में आ पहुंचो। दौड़ो, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ!

आर्य महिला सभा द्वारा बैसाखी पर्व मनाया गया

आर्य महिला सभा की अध्यक्षा माता जगदीश आर्य जी के तत्वावधान में बैसाखी पर्व एवं वार्षिक महिला सम्मेलन ब्यूटी एवेन्यू में श्रीमती संतोष गोयल के निवास स्थान पर बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। जिसमें सैंकड़ों की संख्या में बहनों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। दिनेश पथिक जी के भजनों ने सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया। बहनों के भी सामूहिक भजन हुए। मुख्य वक्ता स्वामी मधुरानंद जी महाराज ने भारतीय संस्कृति और पर्वों पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में सभी समाजों ने भाग लिया। इसमें नवांकोट, माडल टाऊन, पुतलीघर, लारेंस रोड ने भाग लिया। यह संस्था समय-समय पर ज़रूरतमंदों और गरीबों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहती है। कार्यक्रम के अन्त में प्रसाद बांटा गया और जलपान भी कराया गया। फिर माता जी ने सबका धन्यवाद किया। नवांकोट की बहनें शिवानी और निर्मल ने भजनों द्वारा समय बांधा।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।